बृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण

अर्थव्यवस्था का सिंहावलोकन

1. पिछले दो दशकों में अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, और वार्षिक औसत विकास दर सत्तर के दशक में 2.9 प्रतिशत के निम्न स्तर से बढ़कर नब्बे के दशक में 5.8 प्रतिशत हो गयी। विकास में यह सुधार संरचनात्मक परिवर्तन के साथ भी रहा है, क्योंकि सकल घरेलू उत्पाद में कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों का हिस्सा सत्तर के दशक एवं 2003-04 के दौरान 42.8 प्रतिशत के औसत से घटकर 22.1 प्रतिशत रह गया था, सेवा क्षेत्र के हिस्से में सुधार होकर यह 34.5 प्रतिशत के औसत से बढ़कर 51.0 प्रतिशत हो गया, जबकि उद्योग की भागीदारी में सीमान्त तौर पर सुधार होकर यह 22.8 प्रतिशत के औसत से बढ़कर 26.9 प्रतिशत हो गया। मुद्रास्फीति हाल के वर्षों में एक अंक में बनी रही जबकि यह सत्तर तथा नब्बे के दशक के प्रारम्भ में दो अंकों में थी। खाद्यान्न उत्पादन वर्ष 1970-71 में 108.4 मिलियन टन से बढ़कर 2003-04 में 210.8 मिलियन टन हो गया। वैदेशिक क्षेत्र में भी बदलाव देखा गया जब विदेशी मुद्रा भण्डार 12 जुलाई,1991 को 1 बिलियन अमरीकी डालर से भी कम स्तर पर थे लेकिन वर्ष 2003-04 के अन्त में 113 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक हो गए। वर्ष 1997 के पूर्वी-एशिया संकट तथा हाल के वर्षों में 2002 के सबसे भीषण सूखे के बावजूद अर्थव्यवस्था ने उनका मुकाबला किया, और अपने लचीलेपन को प्रदर्शित किया।

आर्थिक विकास

2. वर्ष 2003-04 सूखे की पृष्ठभूमि से प्रारम्भ हुआ क्योंकि सूखे के कारण वर्ष 2002-03 में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि घटकर 4.0 प्रतिशत रह गयी थी जिसका प्रमुख कारण कृषि क्षेत्र में 5.2 प्रतिशत की तीव्र गिरावट रहा। उद्योग के विकास में सुधार की दर वर्ष 2001-02 में 3.4 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2002-03 में 6.4 प्रतिशत हो गयी और सेवा क्षेत्र में, इसी अवधि के दौरान यह 6.8 प्रतिशत से बढ़कर 7.1 प्रतिशत हो गयी जिसने भीषण सूखे के वर्ष में विकास के संतुलन को बनाए रखा।

3. पर्याप्त मानसून की वजह से वर्ष 2003-04 में विकास में पुनःउछाल आया। वर्ष 2003-04 में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में 8.2 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी का अनुमान है जिसमें कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों में 9.1 प्रतिशत, उद्योग में 6.7 प्रतिशत तथा सेवा क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि का योगदान है। 8 प्रतिशत से अधिक विकास दर अतीत में केवल तीन वर्षों 1967-68 (8.1 प्रतिशत), 1975-76 (9.0 प्रतिशत) तथा 1988-89 (10.5 प्रतिशत) में प्राप्त की गयी थी। वर्ष 2002-03 में औद्योगिक विकास की बहाली वर्ष 2003-04 में भी बनी रही जिसे विनिर्माण तथा विद्युत, गैस और जलापूर्ति के निष्पादन में आए महत्वपूर्ण सुधार से सहायता मिली।

वैदेशिक क्षेत्र

4. विदेशी मुद्रा भंडारों में हाल के वर्षों में लगातार वृद्धि हो रही है। महत्वपूर्ण परिवर्तन जो 2003-04 और 2002-03 के दौरान भंडारों के अन्तर्प्रवाह की बनावट में देखे गए, हैं :(क) चालू लेखे अधिशेष में 4.1 बिलियन अमरीकी डालर से 8.7 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि; (ख) निवल पूंजी अन्तर्प्रवाह में 12.8 बिलियन अमरीकी डालर से 22.7 बिलियन अमरीकी डालर की महत्वपूर्ण वृद्धि; (ग) पूंजी लेखे में पोर्टफोलियो निवेश, अनिवासी जमा तथा अल्पकालिक ऋण में वृद्धि और (घ) 4.4 बिलियन अमरीकी डालर से 5.4 बिलियन अमरीकी डालर के वृहत् मूल्यांकन परिवर्तन, जिससे अमरीकी डालर की तुलना में यूरो, पौंड स्टर्लिंग और येन के महत्व प्रतिबिम्बत होते हैं।

5. विश्व व्यापार की वृद्धि में सुधार आने से निर्यातों में अमरीकी डालर के अनुसार वर्ष 2001-02 में 1.6 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में वर्ष 2002-03 में 20.3 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि देखी गयी। अमरीकी डालर के अनुसार 2003-04 में निर्यातों में 17.1 प्रतिशत की और वृद्धि हुई। आयातों में दो वर्षों तक स्थिरता रहने के पश्चात 2002-03 में 19.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। इस उच्च वृद्धि का

कारण अधिक मात्रा का परिमाण और यूनिटों का उच्च स्तरीय मूल्य रहा था। अन्तर्राष्ट्रीय कच्चे तेल के मूल्यों में वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में पेट्रोलियम, तेल और स्नेहकों (पीओएल) के आयातों में 2002-03 में 26.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी जबकि पी ओ एल - भिन्न आयातों में 17.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। 2003-04 में आयातों में 22.8 प्रतिशत की और तीव्र वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप, व्यापार-अन्तर पिछले वर्ष में 12.8 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2003-04 में 16.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। तथापि, अदृश्य के अंतर्गत 25.4 बिलियन अमरीकी डालर के अधिशेष सहित चालू लेखा में तीसरे अनुवर्ती वर्ष के दौरान (8.7 बिलियन अमरीकी डालर) का अधिशेष दर्ज किया गया। भुगतान संतुलन के पूंजी लेखा में अधिशेष 2002-03 में 12.8 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2003-04 में 22.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। वर्ष 2001-02 के बाद से चालू और पूंजी लेखा अधिशेषों की संयुक्त कार्रवाई से बढ़ी मात्रा में समग्र अधिशेष के साथ-साथ विदेशी मुद्रा प्रारक्षित भंडारों में भी वृद्धि हुई है।

6. पिछले वर्ष के अंत में 104.9 बिलियन अमरीकी डालर के विदेशी ऋण के मुकाबले 2003-04 के अंत में 112.6 बिलियन अमरीकी डालर का विदेशी ऋण होने का अनुमान है। इसी अवधि के दौरान कुल बकाया ऋण के समानुपात के रूप में रियायती ऋण और अल्प-कालिक ऋण का संबंधित हिस्सा 36.8 प्रतिशत और 4.4 प्रतिशत से मामूली सा गिरकर क्रमशः 35.8 प्रतिशत और 4.2 प्रतिशत रह गया। सकल घरेलू उत्पाद के समानुपात के रूप में कुल बकाया ऋण 20.2 प्रतिशत से कम होकर 17.8 प्रतिशत रह गया है। पिछले वर्षों के दौरान राजकोषीय घाटे का विदेशी स्रोतों से वित्तपोषण न केवल घटता रहा है बल्कि हाल के वर्षों में यह नकारात्मक रहा है। विदेशी ऋण की स्थिति सापेक्षतया सुखद है।

मुद्रा, बैंकिंग और पूंजी बाजार

7. प्रत्याशित वास्तविक वृद्धि की अपेक्षा अधिक वृद्धि के अनुरूप वर्ष दर वर्ष 2002-03 में 14.7 प्रतिशत की वृद्धि के पश्चात व्यापक मुद्रा ($एम_3$) 2003-04 में बढ़कर 16.4 प्रतिशत हो गई। आरक्षित मुद्रा पिछले वर्ष 9.2 प्रतिशत की तुलना में 2003-04 में तेजी से बढ़कर 18.3 प्रतिशत हो गई जिसमें 2003-04 में भारतीय रिजर्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में 35.2 प्रतिशत की वृद्धि के कारण पूर्ण योगदान था जबकि 2002-03 में यह वृद्धि सर्वाधिक 35.7 प्रतिशत थी। 11 जून, 2004 को $एम_3$ में वर्षानुवर्षी वृद्धि 15.3 प्रतिशत थी जो पिछले वर्ष की इसी तारीख में 11.9 प्रतिशत की तुलना में है। 18 जून, 2004 को पिछले वर्ष की इसी तारीख में 10.8 प्रतिशत की तुलना में आरक्षित मुद्रा में वर्षानुवर्षी वृद्धि 12.2 प्रतिशत थी।

8. वर्ष 2003-04 के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों में मांग आधारित जमा राशियों में 30.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष यह 11.3 प्रतिशत थी। आवधिक जमा राशियों में पिछले वर्ष 16.9 प्रतिशत की तुलना में 2003-04 में गिरावट आकर यह 15.3 प्रतिशत रह गई जबकि, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की समग्र जमा राशियों में वृद्धि 2003-04 में 17.3 प्रतिशत थी, पिछले वर्ष में यह 16.1 प्रतिशत थी।

9. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा समग्र ऋण राशियों (खाद्य एवं गैर-खाद्य) में 2003-04 में 14.6 प्रतिशत की वृद्धि दिखाई गई जबकि पिछले वर्ष यह 16.1 प्रतिशत (मर्जर्स को घटाकर) थी। मुख्यतः सार्वजनिक वितरण प्रणली से खाद्यान्नों की अधिक मात्रा में कुल खरीद होने और निम्नस्तरीय अधिप्राप्ति के कारण वर्ष 2002-03 में 8.3 प्रतिशत की गिरावट के बाद खाद्य ऋण में 2003-04 में पुनः 27.3 प्रतिशत की गिरावट आई। गैर खाद्य ऋण में 2003-04 में 17.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो पिछले वर्ष में 18.6 प्रतिशत की तुलना में है (मर्जर्स को घटाकर)। वर्ष 2003-04 के तीसरे त्रैमास से गैर खाद्य ऋण की कुल निकासी में तेजी से वृद्धि दृष्टव्य है।

10. आधुनिकतम व्यापार प्रणाली और सुदृढ़ स्वीकृति कार्यतंत्र के कार्यन्वयन के कारण पूंजी बाजार ने तेजी से प्रगति की है। वर्ष 2003-04 के दौरान व्यापार परिमाण, मूल्यों और नकदी में नई वृद्धियां दर्ज की गईं। इक्विटी बाजार पूंजीकरण मार्च 2003 में 7.2 ट्रिलियन रुपये से बढ़कर मार्च

2004 में 13.7 ट्रिलियन रुपये हो गया। वर्ष 2003-04 में इक्विटी बाजार पूंजीकरण सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 49 प्रतिशत था। वर्ष 2003-04 में 33 प्रारंभिक लोक निर्गम और 19 अधिकार निर्गम थे जबकि 2002-03 में 14 प्रारंभिक लोक निर्गम और 12 अधिकार निर्गम थे। वर्ष 2003-04 में लोक एवं अधिकार निर्गमों के जरिये 20,059 करोड़ रुपए जुटाये गये जबकि 2002-03 में 4,070 करोड़ रुपए जुटाये गये थे।

केन्द्रीय सरकार के वित्त

11. नब्बे के दशक के प्रारंभिक वर्षों में कुछ सुधार के बाद सरकारी कर्मचारियों के वेतन संशोधन और आर्थिक मंदी के कारण राजकोषीय स्थिति 1997-98 से खराब होनी शुरू हुई। केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा 1990-91 में सकल घरेलू उत्पाद के 6.6 प्रतिशत से कम होकर 1996-97 में सकल घरेलू उत्पाद के 4.1 प्रतिशत पर पहुंचने के बाद 1997-98 से बढ़ना शुरु हुआ और 2001-02 में सकल घरेलू उत्पाद के 6.2 प्रतिशत पर आ गया। केन्द्र सरकार के राजस्व घाटे की स्थिति तेजी से खराब हुई थी। उच्च राजकोषीय घाटे के संचित प्रभाव के कारण ऋण-सकल घरेलू उत्पाद अनुपात में वृद्धि हुई है। केन्द्र सरकार की बकाया देयतायें 1990-91 में सकल घरेलू उत्पाद के 55.3 प्रतिशत से घटकर 1998-99 में 51.2 प्रतिशत पर आने के बाद 2002-03 में बढ़नी शुरु हुई और सकल घरेलू उत्पाद के 62.1 प्रतिशत पर आ गई।

12. वर्ष 2003-04 में राजकोषीय स्थिति में सुधार हुआ। बजट अनुमान में 1,53,637 करोड़ रुपए (स.घ.उ. का 5.6 प्रतिशत) की तुलना में राजकोषीय घाटा कम होकर संशोधित अनुमान में 1,32,103 करोड़ रुपए (स.घ.उ. का 4.8 प्रतिशत) पर आ गया। 1,12,229 करोड़ रुपए (स.घ.उ. का 4.1 प्रतिशत) के बजट अनुमानों की तुलना में राजस्व घाटा कम होकर 98,308 करोड़ रुपए (स.घ.उ. का 3.6 प्रतिशत) हो गया। राजस्व व्यय, बजट अनुमान से कम था जिसका मुख्य कारण ब्याज भुगतान (2,748 करोड़ रुपए), रक्षा (5,000 करोड़ रुपए) और खाद्य सब्सिडी (2,600 करोड़ रुपए) के अधीन बचतों का होना है जबकि उच्च लागत वाले लोक ऋणों के पूर्व भुगतान/वापस खरीद पर 4080 करोड़ रुपए का अतिरिक्त व्यय हुआ। निवल कर राजस्व बजट अनुमान से 3,370 करोड़ रुपए बढ़ गया जिसका मुख्य कारण निगम कर (11,487 करोड़ रुपए) से अधिक वसूली का होना है जिसने केन्द्रीय उत्पाद शुल्कों (4,412 करोड़ रुपए) और आयकर (3,801 करोड़ रुपए) की कमी को समुचित रुप में पूरा कर दिया। कर-भिन्न राजस्व भी बजट अनुमान से 5,722 करोड़ रुपए बढ़ गया जिसका मुख्य कारण सरकारी क्षेत्र के उद्यमों से बजट की तुलना में अधिक लाभांश प्राप्त होना है।

भविष्य की संभावनाएं

13. भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक नीति विवरणी (18 मई, 2004) में वृद्धि की संभावनायें 2004-05 में 6.5 प्रतिशत दिखाई गई हैं जिसमें कृषि क्षेत्र में 3 प्रतिशत और उद्योग तथा सेवाओं ने अपनी अभिवृद्धि गति बनाए रखी है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह संकेत दिया है कि यह वृद्धि अधिक अर्थात् 7 प्रतिशत भी हो सकती है यदि वर्ष 2003-04 के तीसरे त्रैमास में देखी गई गति को बनाये रखा जाए। वर्ष 2004-05 में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के अन्य अनुमान 6.0 से लेकर 7.4 प्रतिशत तक अलग-अलग हैं।

14. मानसून पूर्व वर्षा (मार्च से मई) के सामान्य से 25 प्रतिशत अधिक होने का अनुमान है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने वर्ष 2004-05 के लिए कुल मिलाकर सामान्य और समान रूप से वितरित वर्षा का पूर्वानुमान व्यक्त किया है। यह कृषि पैदावार के लिए शुभ लक्षण है। उद्योग और सेवा क्षेत्रकों में भी हाल के वर्षों में देखी गई तेजी की गति बने रहने की सम्भावना है। औद्योगिक अभिवृद्धि ने हाल के वर्षों में गति पकड़ी है और इसमें 2001-02 में 3.4 प्रतिशत से 2002-03 में 6.4 प्रतिशत की वृद्धि और 2003-04 में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सेवा क्षेत्रक में भी तेजी से वृद्धि हुई है जो 2001-02 में 6.8 प्रतिशत और 2002-03 में 7.1 प्रतिशत तथा 2003-04 में और अधिक 8.7 प्रतिशत तक जा पहुंची है। केन्द्र सरकार के राजस्व शेष में 2004-05 में लगातार सुधार आने की सम्भावना है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ ऋण के ब्याज में भारित औसत ब्याज दर के फार्मूले से कमी, करों में

उछाल और व्यय प्रबंधन में सुधार का योगदान है। राजकोषीय घाटे में भी सुधार की संभावना है, लेकिन उतनी नहीं जितनी कि राजस्व घाटे में आई है फिर भी विकास को सुधारने के लिए सार्वजनिक निवेश को गति प्रदान करने के सुविचारित प्रयास किए जा रहे हैं।

15. वर्ष 2003-04 में विश्व अर्थव्यवस्था के सुधार में सुदृढ़ता और व्यापकता आई है। अप्रैल 2004 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा प्रकाशित वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम के अनुसार 2003 के उत्तरार्द्ध में विश्व सकल घरेलु उत्पाद वृद्धि का औसत लगभग 6 प्रतिशत वार्षिक था जो 1999 के बाद से सबसे अधिक है। भारतीय निर्यात की सम्भावनाएं 2004-05 में उज्ज्वल दिखती हैं। भारत पहले ही मोटर पुर्जों के निर्यात के एक केन्द्र के रूप में उभर चुका है। विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार आने से उत्पादन और व्यापार में वृद्धि की सम्भावना उज्ज्वल हुई है। 1 जनवरी 2005 से वस्त्र एवं परिधान सम्बन्धी करार के चरणबद्ध तरीके से समाप्त होने से वस्त्रों के निर्यात में तेजी आ सकती है। विशाल विदेशी मुद्रा भण्डार व्यापार सुधारों को अधिक व्यापक बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। तथापि, ऊंचे अंतर्राष्ट्रीय तेल मूल्यों के अर्थ में परस्पर लेनदेन की मुद्रा दरों में अस्थिरता और विश्व की मुद्रा स्फीति में रैली में प्रति कूल जोखिम है और इनके लिए एक गतिशील व अंशशोधित प्रत्युत्तर है।

16. संक्षेप में, हम वर्तमान बृहत आर्थिक परिदृश्य को एक चुनौती और अवसर के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पूंजी और वस्तु बाजारों की अनिश्चितताओं तथा बढ़ते हुए मुद्रास्फीतिकारी दबावों के संदर्भ में यह एक चुनौती है। यह नीतियों के लिए एक अवसर है कि भौतिक और सामाजिक दोनों की आधारभूत ढांचा सुविधाएं बढ़ाए, मानवोचित सुधारों के अनुसार काम करें और तीव्र राजकोषीय समेकन लागू करें।

17. वर्ष 2004-05 के बजट अनुमान, विशेषतया सकल कर राजस्व, सुदृढ़ वृहद आर्थिक पर्यावरण के प्रतिपादन पर निर्भर हैं। बजट में प्रस्तावित राजकोषीय समेकन, आयोजना-भिन्न राजस्व व्यय में वृद्धि में कमी के संदर्भ में वहनीय उदार ब्याज दर प्रणाली व मूल्यों में स्थायित्व पर स्थिर है। वर्ष 2004-05 के बजट में भौतिक और सामाजिक आधारभूत ढांचे में सार्वजनिक निवेश में वृद्धि के माध्यम से गतिशील अभिवृद्धि संवेग और वृहद् आर्थिक स्थायित्व सुदृढ़ करना है।

बृहद आर्थिक रूपरेखा विवरण
(आर्थिक कार्य निष्पादन : एक दृष्टि)

क्र सं.	मद	निरपेक्ष मूल्य			प्रतिशत परिवर्तन	
			अप्रैल-मई			अप्रैल-मई
		2003-04	2003-04	2004-05	2003-04	2004
	वास्तविक क्षेत्र					
1.	कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (हजार करोड़ रुपए)					
	(क) वर्तमान मूल्य पर	2523.9 (सं.)	-	-	12.2 (सं.)	-
	(ख) 1993-94 के मूल्य पर	1426.7 (सं.)	-	-	8.2 (सं.)	-
2.	औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक (1)	188.8	174.0	190.3	6.9	9.4 *
3.	थोक मूल्य सूचकांक (2) (बिन्दु दर बिन्दु)	180.3	173.8	184.0	4.6	5.9 **
4.	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (3)	504	493	504	3.5	2.2
5.	मुद्रा पूर्ति (एम3) (हजार करोड़ रुपए)	2000.3	1796.7	2070.8	16.4	15.3 $
6.	वर्तमान मूल्यों पर आयात***					
	(क) करोड़ रुपए में	346474	54840	65192	16.6	18.9
	(ख) मिलियन अमरिकी डालर में	75400	11613	14607	22.8	25.8
7.	वर्तमान मूल्यों पर निर्यात					
	(क) करोड़ रुपए में	283604	40933	48315	11.2	18
	(ख) मिलियन अमरिकी डालर में	61718	8668	10823	17.1	24.9
8.	व्यापार संतुलन (मिलियन अमरिकी डालर में)	-13682	-2945	-3784	57.4	28.5
9.	विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियां					
	(क) करोड़ रुपए में	466215	366516	519847	36.5	41.8
	(ख) मिलियन अमरिकी डालर में	107448	77932	114102	49.5	46.4
10.	चालू लेखा संतुलन (मिलियन अमरिकी डालर में)	3226 @	-	-	10.4 @@	-

(करोड़ रुपए)

		2002-03	सं.अ. 2003-04	ब.अ. 2004-05	सं.अ. 2002-03 की तुलना में 2003-04	सं.अ. 2003-04 की तुलना में ब.अ.2004-05
	सरकार की वित्तीय स्थिति#					
1.	राजस्व प्राप्तियां	231748	263027	309322	13.50	17.60
2.	कर राजस्व (निवल)	159425	187539	233906	17.63	24.72
3.	कर भिन्न राजस्व	72323	75488	75416	4.38	-0.10
4.	पूंजी प्राप्तियां (5+6+7)	182414	211228	168507	15.80	-20.23
5.	ऋणों की वसूली	34191	64625	27100	89.01	-58.07
6.	अन्य प्राप्तियां	3151	14500	4000	360.17	-72.41
7.	उधार और अन्य देनदारियां	145072	132103	137407	-8.94	4.02
8.	कुल प्राप्तियां (1+4)	414162	474255	477829	14.51	0.75
9.	आयोजना-भिन्न व्यय	302708	352748	332239	16.53	-5.81
10.	राजस्व लेखा	268074	284801	293650	6.24	3.11
	जिसमें से:					
11.	ब्याज भुगतान	117804	124555	129500	5.73	3.97
12.	पूंजी खाता	34634	67947	38589	96.19	-43.21
13.	आयोजना व्यय	111455	121507	145590	9.02	19.82
14.	राजस्व खाता	71554	78086	91843	9.13	17.62
15.	पूंजी खाता	39901	43421	53747	8.82	23.78
16.	कुल व्यय (9+13)	414162	474255	477829	14.51	0.75
17.	राजस्व व्यय (10+14)	339628	362887	385493	6.85	6.23
18.	पूंजी व्यय (12+15)	74535	111368	92336	49.42	-17.09
19.	राजस्व घाटा (17-1)	107880	99860	76171	-7.43	-23.72
20.	राजकोषीय घाटा {16-(1+5+6)}	145072	132103	137407	-8.94	4.02
21	प्रारम्भिक घाटा (20-11)	27268	7548	7907	-72.32	4.76

टिप्पणी : रेलवे के आंकड़े बजट के अनुसार घटा दिए गए हैं।
* अप्रैल से संबंधित
** 19 जून की स्थिति के अनुसार
$ 11 जून की स्थिति के अनुसार
*** सीमा शुल्क आंकड़ों के आधार पर आयात
@ अप्रैल-दिसम्बर 2003
@@ अप्रैल-दिसम्बर 2002 की तुलना में अप्रैल-दिसम्बर 2003
# लेखा महानियंत्रक

सं. - संशोधित अनुमान
1. आधार 1993-94=100
2. आधार : 1993-94, वर्ष के अंत में
3. आधार : 1982, मई के महीने से संबंधित